सूर्य सदन गीत

सूर्य सदन के हम बालक,
विद्यालय हमको प्यारा है।
तन मन में है शक्ति प्रबल,
सारा आकाश हमारा है।
सूर्य देव है इष्ट हमारा,
सब में जीवन भरता है।
आलस दूर भगाकर प्रतिदिन,
अन्धकार से लड़ता है।
सभी प्रकाशित इसके तप से,
स्वयं स्वतः प्रकाशित है।
तिमिर तिरोहित तेज विमोहित
तृण तृण में उद्‌भाषित है,
सुख है दुःख है अस्त उदय है,
जीवन चक्र चला करता है।
सूर्य वीर आगे बढ़ता है,
कायर हाथ मला करता है।
भारत के सौभाग्य भवन को,
सौरभ से हम महकायेंगे।
नव प्रभात के नव प्रकाश से,
घर आंगन को चमकायेंगें।
भारत होगा विश्व विजेता,
रश्मिरथी हम कहलायेंगे।
नई क्रान्ति की नई प्रभा से,
हम बालक तब मुस्कायेंगें।

सत्यकाम यादव
(भूतपूर्व शैक्षणिक प्रभारी)